पेज - (1) डा० किरनपाल (हिन्दी विभाग) }
वैशाली महिला कॉलेज, हाजीपुर }
दिनांक — 13.05.2020

अजातशत्रु वीर है। आत्मविश्वास के सहारे वह लड़कर कोशल - नरेश प्रसेनजीत को युद्ध में परास्त करता है। इतना ही नहीं, सैन्य शक्ति के अतिरिक्त उसे अपने बाहुबल पर बड़ा विश्वास है। वाजिरा जब उसे बन्दीगृह से मुक्त कर देती है तो अजात भागने का प्रयास तक नहीं करता। उसी समय कारायण के व्यवहार से जब कोशल कन्या के सम्मान में आँच आती है तो अजात उसे सहन नहीं कर पाता। वाजिरा तो कारायण को जीभ सम्भालने की बात कहकर ही चुप हो जाती है किन्तु अजात कारायण को युद्ध के लिए ललकारता है।

अजातशत्रु आत्मसम्मानी है। शत्रु की सीमा में भी वह

सदैव याद रखता है कि वह राजा है। इसलिए ऐसा कोई भी शब्द सुनने को वह तैयार नहीं जिससे उसके सम्मान को ठेस लगे। कोशल - नरेश के बन्दीगृह में कारायण जब उसे 'बन्दी' कहकर सम्बोधित करता हुआ पूछता है 'बन्दी, तुमने ऐसा क्यों किया' तो अजात को टूक उत्तर देता है — "मैं तुमको उत्तर देना नहीं चाहता। तुम्हारे सम्राट से मेरी प्रतिद्वंदिता है — उनके सेवकों से नहीं।" वह अपनी मर्यादा को भली - भाँति समझता है। इसीलिए कारायण, जैसे सेवकों से मुँह लगाना उसे उचित नहीं मालूम होता।

अजातशत्रु के हृदय में केवल क्रूरता और कठोरता ही नहीं, स्वजनों के प्रति उसके

हृदय में आदर और प्रेम का समुचित अंश वर्तमान है। कुछ विद्वानों ने तो अजातशत्रु को अधिक क्रूर बना दिया है। प्रसादजी ने अपनी ले-खनी एवं सहानुभूतिपूर्ण भाव से अजात को अपने माता-पिता का आज्ञाकारी सिद्ध किया है। पद्मना उसे उत्तेजित करती हुई पूछती है — "यदि ऐसा ही था तो क्यों बूढ़े बाप को हटाकर सिंहासन पर बैठा।" जब अजात यह कहता है कि — "तुम्हीं आज्ञा देती माँ! मैं आज भी सिंहासन से हटकर पिता की आज्ञा का प्रस्तुत हूँ — तो अजातशत्रु के प्रति स्वतः हमारे मन में सहानुभूति जग पड़ती है। अजात का यह कथन बतलाता है कि वस्तुतः अपने माता-पिता का आज्ञाकारी पुत्र रहा है।

शुक का भूला जब शाम को घर लौट आये तो उसे भूला नहीं कहा जा सकता। जिस वासवी

Scanned with CamScanner

का उसने अनादर किया था, उसकी गोद में वह शीतलता का अनुभव करता है — "माँ इतनी ठंडी गोद तो मेरी माँ की भी नहीं। आज मैंने जननी की शीतलता का अनुभव किया। मैंने तुम्हारा बहुत अपमान किया है माँ! क्या तुम क्षमा करोगी?"

इसी प्रकार पुत्र की प्राप्ति होने पर वह पिता के स्नेह का अनुभव करता है और बिम्बसार के चरणों में नत-मस्तक होता है — "पिता आपका पुत्र यह कुणीक सेवा में उपस्थित है। ... आपने स्नेह का भूखा सिंहासन देकर मुझे यह सत्य अधिकार से वंचित किया।